पोषण स्मार्ट गाँव कार्यक्रम

drishtiias.com/hindi/printpdf/nutrition-smart-village-initiative

प्रिलिम्स के लिये:

पोषण अभियान, पोषण स्मार्ट गाँव, आज़ादी का अमृत महोत्सव, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

मेन्स के लिये:

कुपोषण को दूर करने संबंधित कार्यक्रम, पोषण अभियान का महत्त्व

चर्चा में क्यों?

पोषण अभियान को मज़बूत करने के लिये **"पोषण स्मार्ट गाँव"** नामक एक कार्यक्रम शुरू किया जाएगा।

यह भारत की स्वतंत्रता के 75वें वर्ष के उपलक्ष्य में **आज़ादी का अमृत महोत्सव** का अंग होगा।

प्रमुख बिंदु

- **परिचय:**
  - यह पहल प्रधानमंत्री के आह्वान के अनुरूप **75 गाँवों को गोद लेने और उन्हें स्मार्ट गाँव में बदलने को संदर्भित** करता है।
  - अ**खिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (AICRP)** केंद्रों और **भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान (ICAR-CIWA)** द्वारा कुल 75 गाँवों को गोद लिया जाएगा।
- **उद्देश्य:**
  - कृषि कार्यों में संलग्न महिलाओं और स्कूली बच्चों को शामिल करते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में **पोषण संबंधी जागरूकता, शिक्षा और व्यवहार परिवर्तन को बढ़ावा** देना।
  - **कुपोषण** को दूर करने के लिये स्थानीय विधि के माध्यम से पारंपरिक ज्ञान का उपयोग करना।
  - घरेलू कृषि एवं **न्यूट्री-गार्डन** के माध्यम से पोषण-संवेदी कृषि को क्रियान्वित करना।

- **पोषण अभियान:**
  - **परिचय:**
    - 8 मार्च, 2018 को **अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस** के अवसर पर सरकार द्वारा राष्ट्रीय पोषण मिशन शुरू किया गया था।
    - अभियान का उद्देश्य **स्टंटिंग,** अल्पपोषण, **एनीमिया** (छोटे बच्चों, महिलाओं और किशोर लड़कियों में) तथा जन्म के समय कम वज़न को क्रमशः 2%, 2%, 3% और 2% प्रतिवर्ष कम करना है।
    - इसमें वर्ष 2022 तक 0-6 वर्ष की आयु के **बच्चों में स्टंटिंग को 38.4% से कम कर 25% तक करने का भी लक्ष्य** शामिल है।
  - **पोषण 2.0:**

    हाल ही में महिला और बाल विकास मंत्रालय ने **पोषण 2.0** का उद्घाटन किया और सभी आकांक्षी ज़िलों से पोषण माह (1 सितंबर, 2021 से) के दौरान एक पोषण वाटिका (पोषण उद्यान) स्थापित करने का आग्रह किया।
- **भारत में कुपोषण परिदृश्य:**
  - इस अस्वस्थता से निपटने के लिये दशकों के निवेश के बावजूद भारत की बाल कुपोषण दर अभी भी दुनिया में सबसे जोखिमयुक्त देशों में से एक है।

    ग्लोबल हंगर इंडेक्स (2021): इसकी गणना जनसंख्या के कुल अल्पपोषण, चाइल्ड स्टंटिंग, वेस्टिंग और बाल मृत्यु दर के आधार पर की जाती है। भारत को 116 देशों में 101वें स्थान पर रखा गया है।
  - भारत के कुल रोग भार के 15% के लिये बच्चे और मातृ कुपोषण संबंधी समस्या ज़िम्मेदार है।
  - अब तक किये गए 22 राज्यों के राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस) (2019-2021) के पाँचवें दौर के आँकड़ों के अनुसार, केवल 9 राज्यों में अविकसित बच्चों की संख्या में कमी, 10 राज्यों में कमज़ोर बच्चों में और छह में कम वज़न वाले बच्चों की संख्या में गिरावट देखी गई। .
  - शोध से पता चलता है कि भारत में बाल कुपोषण के कारण संबंधी हस्तक्षेपों पर खर्च किया गया। 1 अमरीकी डालर सार्वजनिक आर्थिक प्रतिफल में वैश्विक औसत से तीन गुना अधिक अमरीकी डालर (34.1 से 38.6) उत्पन्न कर सकता है।
  - अध्ययनों से पता चलता है कि भारत बाल कुपोषण के कारण अपने सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 4% तक और अपनी उत्पादकता का 8% तक खो देता है।

स्रोत: पीआईबी